www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 8, 9-10

Article ID: 212

धान की फसल में कीट व रोगों पर कैसे नियंत्रण करें

प्राची अवधिया, अमित सिंह तिवारी और अतुल कुमार नामदेव, तरसन यादव

कृषि विज्ञान विभाग,
एकेएस विश्वविद्यालय, सतना
(म.प्र.), भारत

धान भारत की प्रमुख फसल है जिस पर भारत की लगभग आधी से भी अधिक जनसंख्या निर्भर रहती है। अर्थात धान विश्व की 60% जनसंख्या का मुख्य भोजन है। भारत में धान का प्रति हेक्टेयर अर्थात उत्पादन दुनिया के कई देशो से काफी कम है। इसकी सबसे बड़ी वजह है। धान के फसल में लगने वाले कीट व रोगों का सही समय पर नियंत्रण नही होना, जिससे दुनियाभर में धान की फसल में कीट व रोगों के द्वारा 10 से 15 फीसदी उत्पादन कम होने का अनुमान है। धान की फसल में विभिन्न कीटों जैसे- तना छेदक एवं धान का गंधी बग तथा रोगो में ब्लास्ट रोग, भूरी चित्ती रोग, खैरा रोग, शीथ ब्लाइट द्वारा नुकसान पहुँचाया जाता है इसलिए कीटो और रोगो का सही समय पर पहचान करके उनका नियंत्रण करना अति आवश्यक होता है। जिससे हम अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर सके।

धान की फसल में लगने वाले प्रमुख कीट-

1. **धान का पीला तना छेदक -** यह धान का एकलभक्षी एवं प्रमुख कीट है। इसकी लटे पौधे पर मृत धब्बे पैदा करती है जिन पौधों पर इस कीट का प्रकोप जल्दी होता है।उनमे बालियाँ दानो कें बिना रह जाती है। जिसे सफेद बाली कहते है।

इस कीट से धान की बासमती किस्में सर्वाधिक प्रभावित होती है।

कीट प्रबंधन:-

इस कीट के लार्वा धान के पौधो के डंठलो मे सुसुप्ता अवस्था में रहते है। अतः डंठलो को जलाकर नष्ट कर देना चाहिये।

इस कीट का प्रकोप होने पर कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4G@ 2.5 Kg ग्रह प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करे।

2. **धान का गन्धी बग इस -** कीट से अत्यधिक प्रभावित

धान के खेत में एक प्रकार की दुर्गन्ध आती है। इसलिए इस कीट का नाम गंन्धी बग पड़ा है।

कीट प्रबंधन - इस कीट के नियंत्रण के लिए मैला थियान 50 EC @ 625ML/ha. की दर से प्रयोग करना चाहिए।

धान की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग-

1. (**Blast)** ब्लास्ट रोग- 1 - यह पाइरिकुलेरिया ओराइजी फंगस द्वारा फैलता है। तथा इस रोग से प्रभावित धान के पौधो में कालर रोग या रोटन नेक लक्षण दिखाई देते है।

नियंत्रण-

- बीज को बोने से पहले बेविस्टीन 2 ग्राम या कैप्टान 2.5 ग्राम दवा को प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।
- खड़ी फसल में 250ग्राम बेविस्टीन $ 1.25 किलोग्राम इण्डोफिल एम-45 को 1000 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

2. **(Baterial Leaf Blight) जीवाणु पत्ती झुलजा रोग -** यह रोग जेन्थोमोनोज ओराइजी जीवाणु द्वारा होता है। इसे धान नर्सरी का क्रसेक रोग भी कहते है। भारत वर्ष में यह रोग सबसे गंभीर समस्या बन गया है। मुख्य रूप से यह पत्तियों का रोग है।

नियंत्रण-

- बुआई से पूर्व 0.05 प्रतिशत सेरेसान एवं 0.025 प्रतिशत स्ट्रेप्टोसाईक्लिन के घोल से उपचारित कर लेना चाहिये।
- रोग रोधी किस्मों जैसे- आई. आर -20,मंसूरी, प्रसाद, रत्ना, साकेत -4, आदि कि उचित किस्मों का चयन करे।

3. **खैरा रोग-** धान में लगने वाला रोग है। इसमें पत्तियों पर हल्के रंग के धब्बे बनते है। जो बाद में कत्थई रंग के हो जाते है। और पौधा बौना रह जाता है। वह रोग मिटटी में जस्ते की कमी के कारण होता है। जिससे पैदावार में भारी कमी मानी जाती है।

नियंत्रण –

- खैरा रोग से रोकथाम के लिए प्रति एकड़ 10 से 12 किलोग्राम जिंक सल्फेट का इस्तेमाल रोपाई के समय मिटटी में करना चाहिए।
- 2-इस रोग पर नियंत्रण के लिए प्रति एकड़ खेत में 2 किलो ग्राम जिंक सल्फेट ओर 1 किलोग्राम बुझा हुआ चूना को 400 लीटर पानी मे मिला कर छिड़कना चाहिए।